

Core

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली  
सीनियर स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा (कक्षा बारह  
परीक्षार्थी प्रवेश-पत्र के अनुसार भरे

विषय Subject : Hindi Core  
विषय कोड Subject Code : 302  
परीक्षा का दिन एवं तिथि  
Day & Date of the Examination : Saturday, 22-04-2017  
उत्तर देने का माध्यम  
Medium of answering the paper : Hindi

प्रश्न पत्र के ऊपर लिखे  
कोड को दर्शाए :  
Write code No. as written on  
the top of the question paper :

Code Number	Set Number
<u>2/1</u>	● (2) (3) (4)

अतिरिक्त उत्तर-पुस्तिका (ओं) की संख्या  
No. of supplementary answer -book(s) used

<u>Nil</u>
------------

विकलांग व्यक्ति : हाँ / नहीं  
Person with Disabilities : Yes / No

<u>No</u>
-----------

किसी शारीरिक अक्षमता से प्रभावित हो तो संबंधित वर्ग में ✓ का निशान लगाएँ।  
If physically challenged, tick the category

B	D	H	S	C	A
---	---	---	---	---	---

B = दृष्टिहीन, D = मूक व बधिर, H = शारीरिक रूप से विकलांग, S = स्पास्टिक  
C = डिस्लेक्सिक, A = ऑटिस्टिक  
B = Visually Impaired, D = Hearing Impaired, H = Physically Challenged  
S = Spastic, C = Dyslexic, A = Autistic

क्या लेखन - लिपिक उपलब्ध करवाया गया : हाँ / नहीं  
Whether writer provided : Yes / No

<u>No</u>
-----------

यदि दृष्टिहीन हैं तो उपयोग में लाए गये  
सॉफ्टवेयर का नाम : None  
If Visually challenged, name of software used :

\*एक खाने में एक अक्षर लिखें। नाम के प्रत्येक भाग के बीच एक खाना रिक्त छोड़ दें। यदि परीक्षार्थी का नाम 24 अक्षरों से अधिक है, तो केवल नाम के प्रथम 24 अक्षर ही लिखें।  
Each letter be written in one box and one box be left blank between each part of the name. In case Candidate's Name exceeds 24 letters, write first 24 letters.

कार्यालय उपयोग के लिए  
Space for office use

3403329  
302/03378

खण्ड - ग

8) (क) 'तुम', 'तुम्हारा' सर्वनाम कवि की रहस्यमय प्रिय के लिए प्रयुक्त हुआ है जो उनकी माँ, बहन, प्रेमिका, पत्नी कोई भी हो सकती है। हमें ऐसा इसलिए लगता है क्योंकि कवि पूरी तरह उसके प्रेम में मगन है और अपने अन्त-बाह्य उसी को देखकर लोगों में प्रेम बाँट रहे हैं।

(ख) वह 'अनजान रिश्ते' कवि का उनके रहस्यमय प्रिय से है। यह रिश्ता उनके दिल, दिमाग में पूरी तरह समा गया है और उनकी आनंदित करता है।

इसका उनपर यह प्रभाव पड़ा कि उनकी आत्मा कमजोर हो गई, वे भविष्य की आशंका से दूर हैं और हमेशा अपने प्रिय को चारों तरफ सहस्रस करते हुए लोगों में प्रेम बाँटते हैं।

(ग) इसका अर्थ है कि कवि हमेशा लोगों में प्रेम बाँटते रहते हैं और आत्मनिर्भर होने के लिए अपने प्रिय को भूलने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन जितना भी वह प्रेम बाँट रहे हैं उतना ही वह प्रेम बढ़ता जा रहा है। ऐसा लग रहा है उनके मन में प्रेम सही सीढ़ी पानी का झरना है जो निरंतर बह रहा है।



(घ) कवि की मनःस्थिति असमंजस वाली है। वह अपने प्रिय को जितना भूलने की कोशिश कर रहे हैं उतना ही उनका प्रेम बढ़ रहा है। वे हृदय में प्रिय का प्यार, यदि लिए हैं और चंद्रमा में भी अपने प्रिय को ही देख रहे हैं। वे प्रिय के प्रेम और दूसरों में प्रेम बलि में खो चुके हैं।

9) (क) काव्यांश में 'स्वर्द्धि हृद' का प्रयोग है।  
 'स्वर्द्धि' उर्द्धि का हृद है। इसमें पहले, दूसरे और चौथे पंक्ति में तुक मिलता है और तीसरी पंक्ति स्वतंत्र होती है।

(ख) 'चाँद के टुकड़े' में सपक अलंकार है। माँ अपनी ममता और वात्सल्य के कारण अपने बच्चे पर चाँद होने का आरोप कर रही हैं। यहाँ पर कवि ने बच्चों के चाँद के टुकड़े के समान कोमल, सुन्दर होने का दृश्य सच किया है।

(ग) काव्यांश की भाषा की दो विशेषताएँ निम्न हैं—

- सरल, सहज, प्रवाहपूर्ण, खड़ी बोली का प्रयोग है।
- कवि ने देशज शब्द अर्थात् क्षेत्रीय भाषा का अनुठा प्रयोग किया है। जैसे— लौका।

10) (क) पथिक → पथिक की गति में तीव्रता का कारण था कि उसका जीवन क्षणभंगुर है और इच्छाएँ अनंत हैं इसलिए जब वह अपनी मंजली के पास पहुँचने

लगाता है तो जल्दी-जल्दी चलता है कि कहीं रास्ते में ही देर न हो जाए।

पक्षी → पक्षियों की तीव्रता का कारण उनके बच्चे होते हैं जो अपनी माँ का खाने के लिए इंतजार कर रहे होते हैं। इन्हीं के बारे में सोचकर पक्षी तेज उड़ने लगते हैं कि कहीं रात न हो जाए।

कवि → कवि की गति में शिथिलता का कारण यह है कि उनका कोई अंफा नहीं है। वह यह सोचकर धीरे हो जाते हैं कि वह किसके लिए तेज फूँ। हमसे उम्मीद करने वाले ही हममें तीव्रता लाते हैं। कवि से किसी की उम्मीद नहीं है क्योंकि उनका कोई नहीं है।

(ख) 'बात की चुड़ी मरने' का अर्थ है जटिल शब्दों के प्रयोग करने से बात का मूल भाव खत्म हो जाना। बात जिस अर्थ के लिए कही गई थी उसमें न रहना। भाषा में उलझने के कारण सरल बात भी कठिन हो जाती है और उसका भाव खत्म हो जाता है।

'बात को सहूलियत से बरतने' का अर्थ है बात को भाषा में न फँसाकर सरल तरह से कहना। हर शब्द का अपना अर्थ होता है और उनका प्रयोग स्थिति देखकर ही करना चाहिए। भाषा में ज्यादा नहीं उलझना चाहिए।



11) (क) स्वभाव का ह्रास तब होता है जब हम बाजार की चीजें और उसके आकर्षण को देख उसपर मुग्ध हो जाते हैं और अनावश्यक चीजें खरीदना चाहते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि हमारे अपने अपने नहीं रहते, हमारे बीच रिश्ता नहीं रहता और हम ग्राहक, बिक्रेता की तरह एक दूसरे को ठगना चाहते हैं।

(ख) स्वभाव में ग्राहक-विक्रेता व्यवहार इसलिए आ जाता है क्योंकि हमारे मन में असंतोष है और हम कपट का सहारा लेकर सामने वाले को लुटने में लग जाते हैं। हममें स्वार्थ आ जाता है। इसके लक्षण यह हैं कि हम एक-दूसरे को ठगना चाहते हैं और एक की हानि में दूसरे को अपना स्वार्थ दिखता है।

(ग) 'सैले बाजार की' का अर्थ है वो बाजार जहाँ कपट हो, लोग रिश्ते भूल जायें और एक दूसरे को ठगने में लगे रहें। ये मानवता के लिए विडंबना इसलिए है क्योंकि सैले बाजार में आवश्यकताओं का आदान-प्रदान नहीं होता, शोषण होता है, कपट सफल और निष्कपट शिकार होता है।

(घ) आज की उपभोक्तावादी प्रवृत्ति की निम्न विशेषता है -

- छल-कपट से व्यापार होता है।
- लोग अपने स्वार्थ के सामने रिश्ते भूल जाते हैं।
- लोगों का शोषण होता है, आवश्यकताओं का आदान-प्रदान नहीं।



12) (क) भक्तिन लाट साहब तक लड़ने को इसलिए तत्पर हैं क्योंकि वह महादेवी वर्मा से अधिक प्यार करती हैं और उन्हें अकेले कारावास में नहीं जाने देना चाहती। उसे लगता है कि नौकर को मालिक से दूर करना बहुत बड़ा अन्याय इसलिए वह या तो उन्हें कारावास से छुड़ाना चाहती है या खुद भी उनके साथ कारावास जाना चाहती। वह दूसरों की तरह यह अन्याय सहकर चुप नहीं रह सकती।

इससे पता चलता है कि भक्तिन एक सच्ची भक्त या नौकर थी। वह बिना स्वार्थ के महादेवी वर्मा की सेवा करती थी। पूर्ण रूप से समर्पित स्व स्वाभिमानी थी। वह निडर थी और कौटुंबिक से भी नहीं डरती, हिम्मतारी थी।

17 (ख) चार्ली चैप्लिन के व्यक्तित्व में उसके जीवन संघर्षों का बड़ा हाथ है। संघर्षों के कारण ही वह इतने बड़े बन पाए। उनकी माँ पति द्वारा छोड़ी हुई दूसरे दर्जे की स्टैज अभिनेत्री थी। चार्ली का बचपन गरीबी में बीता। उनकी माँ पागल हो गई थी, माँ-बाप दोनों आनाबदोश थे। चार्ली भी घुंसतू थे। उन्होंने बचपन में बहुत संघर्ष किया और कई (आँसू) को सहा। माँ के द्वारा सुनई दो कहानी ने बहुत असर डाला। बाइबल की कहानी सुनकर उनमें स्नेह, कसपा, समता जगी। इसे ही जीवन का सार बनाया। कसाई



के बार-बार गिखे और भेड़ की काटने की कहानी ने हास्य में कसपा  
 अकेले की भावना जगाई।

अत्यधिक संघर्ष और आंदोलन के बाद वह प्रसिद्ध हुए।

(ग) 'नमक' कहानी का मूल संदेश यह है कि भले ही बखारा हो गया हो  
 लेकिन आज भी लोगों में एक दूसरे के प्रति समता, स्नेह की भावना है।  
 सीफ्रिया, सिख बीबी, कस्टम अधिकारी सब अभी भी अपने वतन से प्यार  
 करते हैं, अपनी मिट्टी का सम्मान करते हैं। मीनचित्र पर लकीर खींच देते हैं  
 लोग नहीं बहते। लोग हमेशा इस उम्मीद में रहते हैं कि कभी न कभी  
 फिर से हम एक होंगे।

'नमक' कहानी में सिख बीबी का लाहौर के नमक के लिए प्यार, लाहौर के  
 कस्टम अधिकारी का जामा मस्जिद के लिए सम्मान और सुबिन दास गुप्त का  
 ढाका की मिट्टी के लिए प्यार दिखाता है कि लोगों के दिल अब  
 भी अपने वतन के लिए धड़कते।

वापस स्फटा लाने के लिए हमें उन चंद लोगों को रोकना होगा जो  
 कटुता बंटाने का कार्य कर रहे हैं मंत्री का नहीं। लोगों की स्फटा की उम्मीद  
 को सच करना होगा।



8

(ड) जाति-प्रथा को श्रम-विभाजन का एक सपन मानने के पीछे यह तर्क है कि जाति-प्रथा से श्रम-विभाजन नहीं श्रमिक विभाजन होता है। व्यक्ति को उसकी प्रतिभा के अनुसार नहीं जाति के अनुसार कार्य करना पड़ता है। गर्भधारण के समय से ही उसका कार्य निश्चित रहता है। उस निर्धारित क्षेत्र में रुचि न होने के कारण इंसान ठालू कार्य करता है। इससे देश-निर्माण में हानि होती है। इस परिवर्तनशील जगत में अगर किसी का कार्य बंद हो गया तो उसे इसका कार्य करने की इजाजत नहीं होती। जाति-प्रथा इसलिए मुख्यमंत्री और बेरोजगारी का भी प्रमुख कारण है। जाति निर्धारित करना मनुष्य के खुद के वश में नहीं है इसलिए इसके आधार पर भेद-भाव नहीं होना चाहिए। मनुष्य को उसकी प्रतिभा और कार्यक्षमता (जो उसके वश में है) के आधार पर कार्य चुनने का हक होना चाहिए।

13) यशोधर पंत के जीवन में पुराने होते जा रहे जीवन-मूल्यों और नए प्रचलों के बीच द्वंद था। एक तरफ आधुनिकता थी तो दूसरी तरफ किशनदा की सीख। वे इन दोनों में समाजस्य नहीं बना पा रहे थे।  
 • एक ओर बेटे की तरक्की से खुश थे तो दूसरी ओर उसका इतना पैसा कमाना उन्हें समझाउ इम्प्रापर लग रहा था।  
 • उन्हें बेटे का जीन्स-टॉप और पत्नी का बिना बँह वाला ब्लाइज पहनना



नहीं पसंद था।

- दफ्तर और घर के लोग पारयात संस्कृति को अपना चुके थे लेकिन यशोधर बाबू को यह सब अंग्रेजों के चोंचलें लगते।
- वह स्कूल की बजाय पेटल दफ्तर जाना पसंद करते।
- पार्टी के समय पूजा करने बैठ गए।
- कंक नहीं खाए।
- वे रिश्तेदारी निभाना चाहते थे लेकिन उनके बच्चे ऐसा नहीं चाहते थे।
- नई तकनीकों को अपनाना गर्व महसूस करता था लेकिन सम्राट इम्प्रापर भी लगता।

इन सबके कारण उन्हें अत्यधिक संघर्ष करना पड़ा। उनकी अपने बच्चों और बीवी से नहीं बनती थी। उन्हें सबके साथ होते हुए भी अकेले जीका जीना पड़ा था।

14) (क) सिंधु घाटी की सभ्यता की निम्न विशेषताएँ थी -

- सत्ता पोषित न होकर समाज पोषित था। हथियार सत्ता का प्रतीक है और खुदाई में कोई भी हथियार नहीं मिले।
- नगर-आ नियोजन सुव्यवस्थित था। कुंड में पानी आगमन और निकासी का प्रबंध था। बालियाँ ढकी हुई थी।
- जल संस्कृत कहा जा सकता है क्योंकि पानी का प्रबंध अच्छा था। 700

सै भी ज्यादा कुँएँ थे।

- मकान पक्की ईंटों से बने थे। किसी भी घर का दरवाजा मुख्य सड़क पर न खुलकर संबंध गलियों में खुलता था।
- बड़े घरों में छोटे कमरे आबादी का सूचक था।
- मछलियाँ था और उसके पास दो पात में आठ स्नानाघर थे।
- बौद्ध स्तूप 25 फुट ऊँचे टीले पे था। यहाँ भिक्षु रहा करते थे। इस इलाके को 'गढ़' कहते हैं और यह भारत का सबसे पुराना 'लैंडस्केप' था।
- लोगों का कला से प्यार था - मिट्टी के बर्तन, उत्कीर्ण आकृतियाँ किस हुआ, आदि मिले।
- लघुता से महत्ता थी - नरेश का मुकुट अत्यधिक छोटा मिला।
- लोगों से स्वयं का अनुशासन था।
- सिंधु घाटी आज की सुनियोजित सभ्यता पर पूरे तरह खड़ी उतरती है।

(ख) सौंदलगेकर मास्टर लेखक के मराठी टीचर थे। यही वे व्यक्ति थे जिनके कारण लेखक कविता लिखना शुरू किए। वे लेखक को बहुत मानते और हमेशा उनका प्रोत्साहन हमेशा बढ़ाते थे।



सौंदर्यलोक के चरित्र की निम्न विशेषताएँ हैं —

- वे कविता सुरीली तरह से बच्चों को गाकर सुनाते थे।
- कविता गाते हुए अभिनय भी करते थे।
- उस भाव के दूसरे कवियों को भी कविता सुनाते।
- खुद भी कविता लिखते थे ताँ कभी-कभी अपनी भी कविताएँ सुनाते थे।
- लेखक को कविता लिखने पर शाबाशी देते और दूसरे बच्चा के सामने गवाते।
- वे कविता गाते समय मग्न हो जाते।
- लेखक कविता की भाषा, छंद, अलंकार, आदि के बारे में बताते।

वास्तव में सौंदर्यलोक एक आदर्श शिक्षक हैं जो समाज को सही दिशा पर ले जाते हैं। वे विद्यार्थी को हमेशा आगे बढ़ने की सीख देते और उनका साथ देते।

### खण्ड - क

- 1) (क) दबाव में कार्य करने के नकारात्मक प्रभाव यह हैं कि व्यक्ति तालु कार्य करता है। कार्य में असफलता मिलती है। वह अपना मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य भी खो देता है।



(ख) अगर हम दबाव को अपनी कमजोरी नहीं, ताकत बना ले तो वह हमारी सफलता का कारण बन सकता है क्योंकि सफलता-असफलता, सुख-दुख, आदि केवल हमारे दृष्टिकोण पर ही निर्भर करता है। हमें सकारात्मक सोचना चाहिए।

(ग) दबाव में सकारात्मक सोच यह होता है कि हम उसे अपनी ताकत बना ले। मौजूद समस्या और बोझ को भूलकर यह सोचें कि हम अत्यंत सामर्थ्यशाली हैं जो यह कठिन कार्य हमें मिला तो हमारी बेहतरीन क्षमताएँ जागृत होती हैं।

(घ) कार्य करते समय हमारा मन मस्तिष्क को चलाता है और हमारा मस्तिष्क शरीर को। इसलिए हमें मन में सकारात्मक सोच रखनी चाहिए क्योंकि मन ही हमारे शरीर को चलाता है।

(ङ) इसका अर्थ है कि कुछ लोग दबाव को हमेशा ताकत बना लेते हैं और हमेशा जीते हैं। उन्हें जीतने की आदत हो जाती है लेकिन ऐसे लोग भी हैं जो दबाव को कमजोरी बनाकर हमेशा हार प्राप्त करते हैं।

(च) हमें अपने ऊपर के दबाव को अपनी ताकत बनाकर हमेशा सकारात्मक सोच रखनी चाहिए। इससे हमें ज़रूर सफलता प्राप्त होगी।



(६) हम वही महसूस करते हैं जो हम सोचते हैं। हमारा दिमाग जिस बारे में सोचेगा वह बढ़ती जायेगी। अगर हम अपनी शक्तियों के बारे में सोचेंगे तो अपने-आप को शक्तिशाली महसूस करेंगे।

(ज) शक्ति → दबाव : हमारी शक्ति 'सकारात्मकता : दबाव में भी शक्ति'।  
क्योंकि पूरे गद्य में बड़ी भाव निकला है।

2) (क) कविता मनुष्य के दीप सपने मन को संबोधित है। कविता मनुष्य के मन को कह रही है कि तुम हमेशा जले रहो अर्थात् हमेशा उत्साहित रहे, निराश न हो।

(ख) कालजयी बनकर रास्ते में आने वाली हर जटिल बाधाओं जैसे सागर की तरंगों, भूमंडल, ज्वाल, जड़रीले फल, आदि का दहन करने का कह रही है।

(ग) पत्थर, कंठे रास्ते में आने वाली बाधाओं के प्रतीक हैं। वे पथों को छलनी कर देते हैं अर्थात् हमें तड़कर रोकने और निराश करने की कोशिश करते हैं।

(घ) धरती का अंतर सागर की तरंगों, डोलते भूमंडल, बिजली की द्युति, ज्वाल, आदि समस्या या बाधाओं से दूरी मिल जाता है। यह भी मनुष्य को उसकी मंजिल तक जाने से रोकता है।



(ड.) इसका अर्थ है जिस प्रकार दीप बिना काँपे हमेशा प्रकाश फैलाता है वैसे ही मानव के मन को बिना डरे हमेशा उत्साहित रहना चाहिये। समस्याओं को देखकर निराश नहीं होना चाहिये।

### खण्ड - ख

(क) संचार का महत्त्व —  
 लोगों को देश-विदेश में घटने वाली बुरी घटनाओं के बारे में बताना।  
 लोगों की शिक्षित और संनियंत्रित करना।

(ख) समाचार किसी आधुनिक घटना, समस्या या भावना की रिपोर्ट है जिससे अधिक से अधिक लोगों की सूची और जिससे अधिक से अधिक लोगों पर प्रभाव पड़े।

(ग) इंटरनेट पत्रकारिता के लाभ —

- श्रव्य, दृश्य, शब्द, तीनों माध्यम में सूचना मिलती है।
- हर घड़ी दर में अपडेट होती रहती है।



(घ) जब रिपोर्टर घटनास्थल से फोन करके किसी घटना की सूचना देता है तो इसे 'फ्रॉन-इन' कहते हैं।

(ङ) समाचार-लेखन के छह प्रकार हैं - क्या, कब, क्यों, कहाँ, कैसे, कौन। समाचार में इन सब की जानकारी होनी चाहिए।

4) निम्न पत्र लेखन

परीक्षा भवन,  
नई दिल्ली।  
22 अप्रिल 2017

सेवा में,  
मुख्य अभियंता,  
लोक निर्माण विभाग,  
भारत सरकार,  
नई दिल्ली।

विषय :- सड़क के सही रख-रखाव हेतु आवेदन पत्र।

सहोदय,

सक्रिय निवेदन है कि हाल ही में नोएडा से दिल्ली तक आने वाली

सड़क का निर्माण हुआ था। अभी यह कार्य हुआ एक महीना भी नहीं हुआ और सड़क फिर से टूटने लगी, उसमें कई जगह गड्ढे हो गए हैं। इसके कारण हमें जैसे लोग जो काम से रोज़ दिल्ली के गाँव से बौसडा जाते हैं उन्हें परेशानी उठनी पड़ती है। इसके कारण कई दुर्घटनाएँ भी हो रही हैं। इन सबसे पता चलता है कि सड़क का रख-रखाव असंतोषजनक है। इस सड़क का ठीक होना आवश्यक है। सड़क का पुनः निर्माण अच्छी क्वालिटी की सामग्री से होना चाहिए और इसपर बड़े वाहन न चलने दें। इन सड़कों के रख-रखाव की जिम्मेदारी को भी सही से बिभाजित चाहिए ताकि आम लोगों को तकलीफ न हो।

अतः आपसे विवेदन है कि आप शीघ्र ही इधर ध्यान दें।

सधन्यवाद !

आपकी प्रार्थी,  
अब स।

6- फ़ीचर लेखन

2



## स्वच्छ भारत: स्वस्थ भारत

सुबह का अखबार, खोलते ही मोदी जी की तस्वीर, उनकी स्वच्छ भारत का निर्माण करने की चाह। प्रसिद्ध लोगों द्वारा स्वच्छ भारत बनने का आग्रह। सबके मन में स्वच्छता का सपना और एक स्वस्थ समाज जो तरक्की के पथ पर बढ़े।

स्वच्छता हमारी मूलभूत कर्तव्यों में से एक है। हमारे माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी ने 2 अक्टूबर, 2014 को स्वच्छ भारत के निर्माण के लिए स्वच्छता अभियान शुरू किया था। आज हर व्यक्ति को इसकी खबर है। स्वच्छ भारत के निर्माण से केवल भारत का विकास होगा, यह सत्य नहीं है। हाँ, इससे भारत का विकास तो ज़रूर होगा लेकिन उससे पहले नीचे स्तर पर हमारा विकास होगा। आज अस्वच्छता के कारण न जाने कितनी बيمारी भारत में फैल रही है जैसे टाइफाइड, मलेरिया, आदि। इन सब का मूल कारण हम इंसान हैं। कहने को तो हम 'स्वच्छ भारत: स्वस्थ भारत' के नारे बहुत तेज लगाते हैं लेकिन क्या हम कभी इसमें योगदान देते हैं? हर व्यक्ति अपना घर तो साफ करता है लेकिन वह कूड़ा वह बाहर सड़क पर फेंक देता है। इसके बाद सोचता है कि सफाई हो गई। लेकिन वास्तव में यह स्वच्छता नहीं है, यह केवल स्वयं को साफ रखना। स्वच्छ भारत के लिए हमें अपने घर, गली, शहर, आदि सबको साफ रखना



होगा।

स्वच्छ भारत : स्वस्थ भारत देखने का सपना एक बड़ा सपना जरूर है लेकिन नामुमकिन नहीं। अगर हमारा वातावरण, हमारा भारत स्वच्छ रहेगा तो हम बीमारियों से बचेगें। मृत्युदर कम होगा, और हम भारत के निर्माण में अपना योगदान दे पायेंगे। इसलिए एक विकसित और स्वच्छ भारत के निर्माण के लिए पहले हमें बीमारी फैलाने वाले किटाणु के घर को नष्ट करना होगा, स्वच्छ भारत बनना होगा। यही हमारे देश की प्रगति का कारण बनेगा।

7) आलेख

(4)

भ्रूण-हत्या की समस्या

—अब स

भारत उन शहरों में से एक है जहाँ नरि को देवी माना जाता है, उनकी पूजा की जाती है। साथ ही भारत ही वह देश है जहाँ भ्रूण-हत्या सबसे ज्यादा है। भ्रूण हत्या का अर्थ है कन्याओं को जन्म से पहले ही मार देना। उनके जीवन का खत्म कर देना, उनका जिन का अधिकार छिन लेना।

जहाँ नई टेक्नोलॉजी का विकास करना समाज के लिए लाभकारी माना



गया है, वही इसके कुछ नुकसान भी हैं। आज मनुष्य के पास वह तरीका है जिससे वह गर्भधारण के समय ही जान सकता है कि गर्भ में लड़का है या लड़की। अगर वह लड़का है तो लोग खुश होते हैं और लड़की होती है तो उसे मार दिया जाता। लोग पुरानी सोच के कारण सोचते हैं कि लड़की माँ-बाप पर बुरा होती है। उनकी पढ़ाया-लिखाया जाता है, पैसे खर्च होते हैं और फिर वह दूसरे के घर चली जाती है। इसी सोच के कारण आज समाज में लड़की भ्रूण हत्या हो रही है। लड़कियों की जनसंख्या प्रतिवर्ष कम होती चली जा रही है।

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश माना गया है जहाँ लोगों को उनके सभी अधिकार मिलते हैं। ऐसे देश में नारी को जीने का ही अधिकार नहीं है। यह हमारे लोकतांत्रिकता पर उठा सबसे बड़ा प्रश्न है।

आज के विकासशील युग में हर व्यक्ति को यह समझना चाहिए कि कोई भी ही लड़का या लड़की उसे इस समाज में जीने का हक है और अपना कोई अधिकार नहीं है कि हम किसी को मारे। कहा जाता है—  
 “नर और नारी एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।”

जहाँ यह मान्यता हो वह भ्रूण हत्या नहीं होनी चाहिए। अगर नारी को मौका मिले तो वह लक्ष्मीबाई, मदर टेरेसा, इंदिरा गांधी, आदि बनकर उभर सकती है और देश के निर्माण में बहुत बड़ा योगदान दे सकती है।



भारत को विकासशील देश से विकसित देश बनने के लिए हमें सबसे पहले समाज में व्याप्त 'भ्रूण हत्या' जैसी समस्या को खत्म करना होगा।

"बेटी बचाओ, देश विकसित कराओ।"

3)

निबंध लेखन

विकास के पथ पर भारत

प्रस्तावना - भारत, दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र जहाँ के लोग अपनी कार्यनिष्ठा और लगन, मेहनत के लिए जाने जाते हैं। आज से एक दशक पहले भारत में कुछ नहीं था। हो सकता है भारत को कहीं देश जानते भी न हों। लेकिन पिछले एक दशक में भारत ने जो अंजान भारत से विकासशील भारत तक का सफर तय किया है यह सराहनीय है। आज हर क्षेत्र में भारत विकास के पथ पर चल रहा है चाहे वो टेक्नोलॉजी हो या नारी शक्ति। आज हर जगह भारत का बोल बाला है।

टेक्नोलॉजी में भारत → पिछले कुछ सालों में भारत ने 'साईंस एंड डेवलपमेंट' के क्षेत्र में अधिक पाँव पसार दिए हैं। जहाँ हमें हर चीज़ दूसरे देश से लेनी पड़ती थी वही आज हम दूसरे देशों को चीज़ें



भेज रहे हैं जैसे युद्ध के समान, आदि। आज भारत से भी कई मिसाइल लॉन्च हो रही हैं। नए-नए साइबर उभरकर आ रहे हैं। आज भारत इस क्षेत्र में अमेरिका, जापान, जैसे विकसित देश से भी सामना कर सकता है।

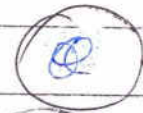
नारी शक्तिकरण → आज के भारत में नारियों को बराबर का सम्मान मिलता है। वह हर क्षेत्र में पुस्तक से कदम से कदम मिलकर चल रही हैं। घर से लेकर सांसद तक नारी शक्ति दिखाई पड़ती। यह भी भारत के विकास का एक कारण है।

मेक इन इंडिया → इस अभियान के शुरू होने के कारण आज भारत बाहर से आयात न करके सब चीज खुद ही बना रहा है। इसके कारण भारत को लोग आत्मनिर्भर होना सीख गए हैं और अब हम चाहें तो चीन, जापान जैसे देशों से पूरी तरह कुछ भी लेंगे से मना कर सकते हैं क्योंकि अब हम अपने आप में पूरे हैं।

उपसंहार — आज विकास के पथ पर चल रहे भारत में सबसे जरूरी है कि हम अपनी इस प्रगति को बनाए रखें और समाज में अशांति फैलना वही तबो को खत्म करें।

अब वह दिन दूर नहीं जब हमारा विकासशील भारत, एक विकसित भारत बन जाएगा और महाशक्ति बनेगा।

3020089



50441